International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(2): 60-63

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(2): 60-63
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-01-2019
Accepted: 26-02-2019

Dr. Vijay Garg
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Hindu College, University of Delhi, Delhi, India

Correspondence
Dr. Vijay Garg
Assistant Professor, Department of Sanskrit, Hindu College, University of Delhi, Delhi, India

छन्दः समीक्षा का अवष्टम्भ सिद्धान्त एवं तिलकमञ्जरी में इसका निदर्शन

Dr. Vijay Garg

सारांश

वेद-वेदांग, न्याय, मीमांसा, साहित्य, वेदान्त आदि के अनन्य विद्वान् पं. मधुसूदन ओझा का जन्म बिहार के प्रांत के मुजफ्फरपुर जिले में विक्रमी संवत 1923 में हुआ। उन्होंने वेद के गम्भीर व कठिन रहस्यों को विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रण लिया था जिससे सामान्य जन भी वेद के ज्ञान से लाभान्वित हो सके। छन्दों का ज्ञान सभी को सरलता से हो सके इसके लिए पं. मधुसूदन ओझा ने छन्दः समीक्षा नामक ग्रंथ का प्रणयन किया। छन्द में गति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कम या अधिक गति छन्द की लय तथा अर्थ को प्रभावित करती है। इसी गति के निरूपण के प्रसंग में पं. ओझा ने विश्राम स्थानों (यति) का वर्णन किया है जिसे उन्होंने अवष्टम्भ कहा है। छन्द की गति के अनुरूप यह अवष्टम्भ पांच प्रकार का होता है- अयति, यति, विरति, विच्छेद, अवसान। प्रस्तुत शोधप्रत्र में इन पांचों प्रकार के अवष्टम्भों का वर्णन कर, धनपाल (10 वीं शताब्दी) द्वारा रचित रसमयी कथा तिलकमञ्जरी से सुंदर उदाहरणों को प्रस्तुत कर उसमें पं. ओझा प्रोक्त अवष्टम्भों को इन उदाहरणों पर घटा कर दिखाया गया है।

कुञ्चिकाशब्दः छन्दः, अवष्टम्भ सिद्धान्त, तिलकमञ्जरी

प्रस्तावना

वेद-वेदांग, न्याय, मीमांसा, साहित्य, वेदान्त के अनन्य विद्वान् पं. मधुसूदन ओझा जी का जन्म बिहार प्रान्त के मुजफ्फरपुर जिले के गाढा ग्राम के मैथिल ब्राह्मण कुल में विक्रम सम्वत् 1923 में हुआ। ओझा जी वेद के उद्भट विद्वान् थे। उन्होने वेदो के गम्भीर व कठिन विषयों तथा रहस्यों को सरल भाषा में विद्वानो के समक्ष प्रस्तुत किया। पं. मधुसूदन ओझा जी ने ब्रह्मविज्ञान, यज्ञ-विज्ञान, इतिहास, वेदांग समीक्षा, आगम रहस्य आदि विषयो पर लगभग 230 वैदुष्यपूर्ण ग्रन्थों की रचना की। सभी को छन्दों का सम्यक् व सरलता से ज्ञान हो सके इसके लिए ओझा जी ने छन्दः समीक्षा नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। छन्द को वेदपुरुष का चरण कहा गया है-

छन्द पादौ तू वेदस्य।

जिस प्रकार बिना चरणों के किसी की भी गति नहीं हो सकती, इसी प्रकार काव्य-जगत् की गति भी छन्दाश्रित है। इसी कारण विषय की गंभीरता को देखते हुए पंडित मधुसूदन ओझा जी ने छन्दः समीक्षा की रचना की।

इस नश्वर संसार का यह शाश्वत नियम है कि व्यवस्थित व नियत मात्राओं तथा अवयवों से ही किसी नियत वस्तु की उत्पत्ति होती है। मात्राओं और अवयवों के भिन्न-भिन्न सन्निवेश से वस्तु भी भिन्नता को प्राप्त करती है। छन्द- विधान में भी यह नियम लागु होता है। मात्राओं आदि की भिन्नता के कारण छन्द वृत्त एवं जातिभेद से दो प्रकार के हो जाते हैं। जिन शब्दों में अक्षर संख्या तथा लघुगुरुस्थानरूप मात्राएं नियत होती हैं, उन्हें वृत छन्द (अक्षरगणच्छन्द) तथा जहां मात्राओं की गणना प्रधान होती है वे जाति छन्द कहलाते हैं अर्थात् जिन पद्यों में छन्द का निर्धारण अक्षरप्रधान गणों के आधार पर होता है वे वृत्त तथा जिन पद्यों में मात्राओं की गणना के आधार पर छन्द का निर्धारण होता है वहां जाति छन्द होते हैं।

पद्य में पाठ करते समय जहां स्वेच्छा से रुका जाता है वे विश्राम स्थान कहलाते हैं। यह विश्राम स्थान तीन प्रकार के होते हैं—पादखंड, पाद तथा दल। जब पद्य में किसी भी प्रकार का विश्राम होता है तो उसे पादखंड,

पादखंड की अपेक्षा अधिक विश्राम होने पर पाद और पाद की अपेक्षा अधिक विश्राम होने पर दल कहा जाता है। जहां इन सबसे अधिक विश्राम होता है, वह चतुष्पदी, श्लोक व पद्य के नाम से व्यवहृत होता है।[1] इन्हीं विश्राम स्थानों के व्याख्या क्रम में पंडित मधुसूदन ओझा ने अवष्टम्भ का निरूपण किया है। छन्दः समीक्षा के परिभाषा अधिकार में वर्णन किया गया है—

छन्दः पदमवष्टम्भो वर्णो मात्रा गणो गतिः।
समयश्चेति विज्ञेयाश्छन्दः शिक्षाबुभुत्सुभिः॥[2]

छन्द, पद, अवष्टम्भ, वर्ण, मात्रा, गण, गति का यथावत अध्ययन करने वाले को छन्दों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है।

अवष्टम्भ

वृत्तरत्नाकरकार ने छन्द के चतुर्थ अंश को पाद तथा श्लोकपाठ के समय जहां रुका जाता है, उन विश्रामस्थलों को यति विच्छेद आदि के नाम से संज्ञित किया है-

ज्ञेयः पादश्चतुर्थांशो यतिविच्छेदसंज्ञितः।

पंडित मधुसूदन ओझा के अनुसार अवष्टम्भ, विष्टम्भ, यम, यति, विरति, विराम, विश्राम, विच्छेद, त्रुटि इत्यादि समानार्थक हैं--

अवष्टम्भो विष्टम्भो यमो यतिर्विरतिर्विरामो विश्रामो विच्छेदस्त्रुटिः इत्यर्थान्तराणि। [3]

अवष्टम्भ, विष्टम्भ, यम, यति, इत्यादि का सामान्य अर्थ प्रायः रुकना, ठहरना, विराम देना, नियंत्रित करना है। इनका व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ भी इसे प्रमाणित करता है-

अवष्टम्भ — अव+स्तम्भ + घञ् -- टेक लगाना ,आश्रय ,सहारा लेना , आधार
विष्टम्भ +स्तम्भ +वि — घञ् -- अवरोधबाधा ,रुकावट ,
विरति क्तिन् + रम् +वि —--- ठहरनारोकना ,
विराम— वि घञ् + रम् +-- रोकनाउपसंहार ,बन्द करना ,
विश्राम — वि घञ् + श्रम् +-- आराम
विच्छेद घञ् + छिद् +वि —--- विभक्त करनाविय ,ोगविराम ,
यति क्तिन् + यम् — -- नियंत्रणठहरना ,आराम ,रोक ,
यम —यम् घञ् +-- संयत करनानियंत्रित करना ,
त्रुटि --काटना ,तोड़ना
छन्द के प्रकार के अनुरूप यति की न्यूनता व अधिकता की तारतम्यता के कारण यह अवष्टम्भ (विश्राम) पांच प्रकार का होता है-- अयति, यति, विरति, विच्छेद, अवसाय -

स चायं न्यूनाधिकतारतम्येन पञ्चधा संज्ञायते अयतिः यतिः विरतिः विच्छेदः अवसायश्चेति भेदात्।[4]

पंडित मधुसूदन ओझा का व्याख्या करने का तरीका अत्यधिक रोचक और अद्भुत् है। वे सामान्य जन के जीवन से जुड़ कर व्याख्या करने का प्रयास करते हैं जिससे सभी को विषय सरलता से स्पष्ट हो जाए। उन्होंने इन पांचो प्रकार के अवष्टम्भ की व्याख्या दैनिक जीवन में अश्व के व्यवहार से तुलना करते हुए की है, जिससे सामान्य से सामान्य जन को भी इन भेदों का ज्ञान सरलता से हो जाता है। अयति की व्याख्या करते हुए ओझा जी का कथन है कि जिस प्रकार अश्व गतिविशेष से रुक-रुककर अपने पैरों का संचालन करता है, छन्द में ऐसी ही गतिरूपता वाला अवष्टम्भ अयति कहलाता है-

यथाहि गतिविशेषेण गच्छन्नश्वो अवष्टभ्यावष्टभ्य पदानि संचारयति तथा गत्यात्मतां गतो अवष्टम्भो अयतिः।[5]

घोड़े को लगाम के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है जिससे वह अनिष्ट मार्ग का अवलंबन न करें और न ही उसकी गति में कोई बाधा हो यह अवष्टम्भ यति कहलाता है-

यथा गच्छन्नश्वो रश्मिभिर्यम्यते निम्ने देशे नायं पतेदिति न तु तस्य गतिरवरुध्यते तथा यतिः।[6]

समाचार ले जाने वाला घुड़सवार जिस पुरुष के लिए संदेश ले जाता है वह उस पुरुष को प्राप्त कर अश्व से उतरे बिना उसे संदेश देकर, उत्तर की अपेक्षा किए बिना उसी क्षण लौट पड़ता है ऐसा अवष्टम्भ विरति कहलाता है-

यथा वृत्तहरो धावको अश्वेन गच्छन्नुपगम्य पुरुषं प्राप्य तस्मै वृत्तांतं दत्वैव प्रतिनिवर्तते नाश्वादवतरति नोत्तरग्रहणं वा अपेक्षते तथा विरतिः।[7]

घुड़सवार दौड़ता हुआ भी मार्ग में आए हुए मित्र के पास पहुंच कर कुछ विश्राम कर लेता है और वार्तालाप से चित्त विनोद कर फिर अपने मार्ग पर चल देता है वह अवष्टम्भ विच्छेद कहलाता है[8]-

यथाश्ववारो धायमानो अपि मध्येमार्गमायांतं सुहृदमासाद्य किञ्चिद्विश्रामयतिआलापेन विनोदितचित्तः पुनरेव स्वस्वमार्गमारोहति , तथा विच्छेदः।[9]

तथा जैसे घुड़सवार जाता हुआ गंतव्य स्थान पर पहुंच कर ठहर जाता है, यह अवसाय नामक अवष्टम्भ है-

यथाश्ववारो गच्छन् गंतव्यस्थानं प्राप्य तिष्ठति तथा अवसायः।[10]

इस प्रकार श्लोक के अंत में प्रयुज्यमान श्लोक की पूर्ति का सूचक अवसाय अवष्टम्भ है। दो चरणों के अंत में विद्यमान श्लोकार्थ की पूर्ति का सूचक अवष्टम्भ विच्छेद है। यह अवसाय की अपेक्षा कम होता है। इसी प्रकार एकपाद के अंत में प्रयुज्यमान श्लोक के चतुर्थांश की पूर्ति का सूचक अवष्टम्भ विरति कहलाता है।श्लोक के पाद के मध्य में नियत अक्षरों के अंत में विश्राम होता है, वह यति नामक अवष्टम्भ होता है।[11]

वृत्तरत्नाकर के व्याख्याकार श्रीनारायण भट्ट ने यति के नियमों और स्थानों का उल्लेख किया है---

यतिः सर्वत्र पादांते श्लोकार्धे तु विशेषतः।
समुद्रादिपदांते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके ।
क्वचित् तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ यतिर्भवेत्।
यदि पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ॥
पूर्वान्तवत् स्वरः सन्धौ क्वचिदेव परादिवत्।
एष्टव्यो यतिचिन्तायां गणादेशः परादिवत्॥

---

1 **छन्दः समीक्षा, भूमिका - पृ. 3**
2 **छन्दः समीक्षा, परिभाषा अधिकार-1**
3 **छन्दः समीक्षा, परिभाषा अधिकार- पृ. 6**
4 **छन्दः समीक्षा, परिभाषाधिकारः पृ. 6**
5 **वही, पृ. 6**
6 **वही, पृ. 6**
7 **छन्दः समीक्षा, छन्दः शिक्षा, पृ. 5**
8 **छन्दः समीक्षा, भूमिका - पृ. 3**
9 **छन्दः समीक्षा, छन्दः शिक्षा, पृ. 6**
10 **वही, पृ. 6**
11 **छन्दः समीक्षा, छन्दः शिक्षा, पृ. 5**

नित्यं पाक्पदसम्बद्धाश्चादयः प्राक् पदान्तवत्।
परेण नित्यसम्बद्धाः प्रादयश्च परादिवत्॥[12]

1. श्लोकपाठ करते समय श्लोक के प्रत्येक चरण के अंतिम पर रुकना चाहिए ।
2. आधा श्लोक पढ़कर अवश्य विराम देना चाहिए ।
3. जहां छंदों के लक्षण निरूपण में समुद्र आदि पदों द्वारा विराम कहा गया है, उन अक्षरों का पाठ करते समय अवश्य विराम देना चाहिए।
4. जहां विभक्ति स्पष्ट हो और जहां समासस्थल में विभक्ति स्पष्ट न हो, वहां विश्राम देना चाहिए ।
5. कहीं सुबन्त एवं तिङन्त पदों के बीच में भी, जहां समुद्रादि पारिभाषिक शब्दोंद्वारा छन्द के लक्षणों में नियम निर्धारित हों, वहां विश्राम देना चाहिए ।
6. किन्तु सुबन्त एवं तिङन्त पदों के बीच में एक ही अक्षर पर विश्राम करना दोषावह होता है। वह धातु, नाम, प्रत्यय और अव्यय इन भेदों से चार प्रकार का 'हतवृत्त' दोष होता है।
7. जहां संधि होती है, वह द्वितीय पद के आद्याक्षर पर जोर देकर विराम देना चाहिए। [13]आदि

तिलकमञ्जरी से मन्दाक्रान्ता छन्द का उदाहरण द्रष्टव्य है। मन्दाक्रान्ता अतियष्टि जाति का 17 वर्णों का छन्द है। (अतियष्टिः सप्तदशाक्षरावृत्तिः) इसका लक्षण है-

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ युग्मम्।
इसमें चतुर्थ व दशम वर्ण पर यति का नियम है--

गेहे देव्याः शुषिरनिपतन्मारुतोत्तानवेणौ
धृत्वा कोणं विरचितलयो वादयन्दंतवीणाम् ।
रात्रौ द्वित्रैः सह सहचरैः सेवते त्वद्विपक्षः
किं संगीतं नहीं नहीं महीनाथ हेमंतशीतम् ॥[14]

हवा द्वारा फैलाए गये छिद्रों वाले बांसो से युक्त देवी के घर के कोने में लय रचते हुए, दन्त वीणा बजाते हुए (पक्ष में- अग्नि में डालते हुए बांसो से युक्त देवी के घर के कोने में आलिंगन करके दांत किटकिटाते हुए) रात्रि में दो तीन सहचरों के साथ आपके विपक्षियों के द्वारा सेवन किया जा रहा है, क्या संगीत का? नहीं नहीं राजन हेमन्त की शीतलता का । यहां पर चतुर्थ व दशम वर्ण पर विश्राम है । यह यति नामक अवष्टम्भ है। पाद के अन्त में विश्राम विरति नामक अवष्टम्भ है। दो चरणों के पश्चात् अधिक विश्राम होने पर विच्छेद नामक अवष्टम्भ है तथा श्लोक के पूर्ण होने पर अवसाय नामक अवष्टम्भ है।

तिलकमञ्जरी से शार्दूलविक्रीडित छन्द का उदाहरण द्रष्टव्य है। शार्दूलविक्रीडित अतिधृति जाति का 19 वर्णों का छन्द है। (अतिधृतिः ऊनविंशत्यक्षरावृत्तिः) इसका लक्षण है-

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।
इसमें बारहवें अक्षर पर यति का नियम है—

जाता सर्वदिशो दिनान्धवयसामन्धास्तवेव द्विषां
प्राप्यंते घटना रथांगमिथुनैस्त्वंद्वाञ्छितार्थैरिव।
आरोहत्युदयं प्रताप एव ते तापः पतंगविषां
द्रष्टुं नाथ भवन्मुखश्रियमिवोन्मीलंति पद्माकराः॥[15]

यहां प्रभातकाल का वर्णन है- प्रभात के उदय के समय तारे पके हुए अनार के बीज के समान लाल वर्ण की कांति से युक्त हो गये हैं, अन्धकार के जीर्ण तन्तु जले हुए पलाल(पुआल) के समान हो गए हैं। पश्चिमी आकाश रूप दीवार पर स्थित चांदनी वाला श्वेत पीत वर्णी पूर्ण चन्द्रबिम्ब मकड़ी के जीर्ण तन्तुगृह के समान प्रतीत हो रहा है।
यहां पर बारहवें वर्ण पर यति का नियम घटित हो रहा है । पादान्त में विश्राम विरति नामक अवष्टम्भ है। दो पादों पर विच्छेद तथा श्लोक के पूर्ण होने पर अवसाय नामक अवष्टम्भ है।
पंडित मधुसूदन ओझा जी की पद विवेचना के अनुरूप बारहवें वर्ण पर विश्राम पादखण्ड है। चरण के अन्त में अधिक विश्राम होने के कारण चरण पाद संज्ञक है तथा दो चरणों पर पाद से अधिक विश्राम होने के कारण यह दल संज्ञक है। चारों चरणों की पूर्णता पर सबसे अधिक विश्राम होने पर यह श्लोक अथवा चतुष्पदी संज्ञक है।
तिलकमञ्जरी से वसन्ततिलका छन्द का सुन्दर उदारहण प्रस्तुत है। वसन्ततिलका शर्करी जाति का 14 वर्णों का छन्द है। (शर्करी चतुर्दशाक्षरावृत्तिः) इसका लक्षण है-

उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः।

इसमें आठवें अक्षर पर यति का नियम है—

निःशेषवाङ्मयविदोऽपि जिनागमोक्ताः श्रोतुं कथा समुपजातकुतूहलस्य।
तस्यावदात्तचरितस्यविनोदहेतो राज्ञः स्फुटाद्भुतरसा रचिता कथेयम्॥[16]

समस्त वाङ्मय का ज्ञाता होने पर भी जिनागमोक्त उपाख्यानों को सुनने में रुचि उत्पन्न होने पर, उस पवित्र चरित्र वाले राजा के विनोद के लिए अद्भुत रस युक्त इस कथा की रचना की।
पंडित मधुसूदन ओझा जी के अनुसार इन पांच प्रकार के अवष्टम्भों में अवसाय और विच्छेद में पूर्व वर्ण तथा परवर्ण में सन्धियोग्यता, समासयोग्यता तथा एकपदयोग्यता नहीं होती। अतः अखण्ड पद तथा समस्तपद के मध्य अवसाय और विच्छेद नहीं करना चाहिए। अवसाय और विच्छेद वाले वर्णों में सन्धि भी नहीं करनी चाहिए। प
प्रस्तुत श्लोक में चरण पूर्ण होने पर विरति, दो चरणों पर विच्छेद तथा श्लोक के अंत में अवसाय नामक अवष्टम्भ है। उपर्युक्त सभी श्लोकों में ओझा जी सम्मत अवसाय और विच्छेद से सम्बन्धित नियमों (अखण्ड पद तथा समस्तपद के मध्य अवसाय और विच्छेद नहीं करना चाहिए आदि) का भी पालन पूर्ण रूप से हुआ है ।
पंडित मधुसूदन ओझा जी ने छन्दः समीक्षा में बहुत ही सूक्ष्मता और तीक्ष्ण दृष्टि से छन्दों का विवेचन किया है। छन्दः समीक्षा का अध्ययन कर कोई भी जिज्ञासु छन्द-शास्त्र में पारंगत हो सकता है। महाकवि धनपाल की तिलकमञ्जरी में आचार्य मम्मट सम्मत **लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात् निपुणता** का दिग्दर्शन सुष्ठुतया होता है। धनपाल वेद-वेदांगों, शास्त्रों के ज्ञाता होने के साथ साथ छन्दः शास्त्र के नियमों से भली- भांति परिचित थे। तिलकमञ्जरी उनके छन्दः शास्त्र के सूक्ष्म ज्ञान को प्रकाशित करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. **छन्दःसमीक्षा** - पंडित मधुसूदन ओझा,)सुरजनदास स्वामी) , ,राजस्थान संस्कृत अकादमी1991

12 छन्दोऽलंकारमञ्जरी, **पृ. 20**
13 छन्दोऽलंकारमञ्जरी, **पृ. 20**
14 तिलकमञ्जरी, पृ. 258
15 तिलकमञ्जरी, पृ. 238
16 तिलकमञ्जरी, पद्य-50

2. **वृत्तरत्नाकर** - केदारभट्ट,)व्या ,पं सत्यनारायणशास्त्री खण्डूडी 2000 ,दिल्ली ,भारतीय विद्या प्रकाशन
3. **तिलकमञ्जरी** चौखम्बा भारती ,धनपाल - अकादमी , वाराणसी,1988
4. **तिलकमञ्जरी में काव्य सौन्दर्य**भारतीय विद्या ,विजय गर्ग.डॉ - ,दिल्ली ,प्रकाशन2014
5. **छन्दोऽलंकारमञ्जरी-** पं **,**जगन्नाथशास्त्री तैलंग .भारतीय विद्या प्रकाशन ,दिल्ली ,2008